

कैलाश

subahsaverenews@gmailDcom
facebookDcom/subahsaverenews
wwwDsubahsaverenews
twitterDcom/subahsaverenews

सुप्रभात

यह समय
रेतीला समय है
आंधी की तो बात ही क्या
हल्के से हवा के झोंको से भी
रेत के टीले हो जाते हैं इधर से उधर
रातों-रात
कल जहां गड्ढे थे
आज वहां टीले खड़े हैं शान से
और टीलों की जगह ले ली है
गहरी खाइयों ने
दिशा - ज्ञान - बोध
सब कुछ भ्रमित हो गया है
एकदम अजनबी सी लगने लगी हैं
अपनी ही परछाईयां,
सहमे - सहमे से खड़े हैं लोग
धूप-छांव तक में अपनापन नहीं दिखता
इस रेतीले समय में
रेत से गड़गड़ाए
तन-मन के ज़ख्मों को
सहलाने में मशगूल हैं लोग
समय ने भी क्या खूब करवट ली है
किस्से-कहानियों और चमत्कारों
से बहलाए गये लोगों में बेचैनी का माहौल है
और बेचैनी भी बढ़ती ही जा रही है
बेचैनी में ही सोचने - समझने के
देखने-परखने के और कुछ बदलने के
ख्वाबों को मिलते हैं पंख
समय बह रहा है
इस रेतीले बेचैन समय में
नई-नई कोंपलें फूटने लगीं हैं
पतझड़ के बाद बसत का आना
सुखद लगता है हमेशा ही ।

- यूसुफ जावेदी

बैलेंस बिगड़ने से ‘दीदी’ के साथ फिर हुई अनहोनी

हेलीकॉप्टर में चढ़ते वक्त गिरीं सीएम ममता बनर्जी, दुर्गापुर में हेलीकॉप्टर से सफर के दौरान हुआ हादसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी फिर घायल हो गईं। दुर्गापुर में हेलीकॉप्टर से सफर के दौरान हादसा हो गया। वह लड़खड़ाकर हेलीकॉप्टर के अंदर गिर गईं। आज उनके कुल्टी और आसनसोल साउथ में दो प्रचार कार्यक्रम थे। उन्होंने मंदिर तक पहुंचने के लिए दुर्गापुर से हेलीकॉप्टर लिया। वह हेलीकॉप्टर पर चढ़कर अपनी सीट पर पहुंचने ही वाली थीं कि अचानक नीचे गिर गईं। हालांकि मुख्यमंत्री कार्यक्रम स्थल तक पहुंचने में कामयाब रही। ममता के साथ मौजूद एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री ठीक हैं। संयोग से ममता



बनर्जी डेढ़ महीने पहले घायल हो गई थीं। तब वह घर पर ही गिर गई थीं। उनके सिर पर जख्म हुआ था। इसके बाद उन्हें 14 मार्च को

अस्पताल ले जाया गया। ममता बनर्जी को एसएसकेएम अस्पताल ले जाया गया। पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं और अनुयायियों ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। घाव पर टांके लगाए गए। वह काफी समय तक डॉक्टरों की निगरानी में थीं। हालांकि घर पर गिरने को लेकर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने ममता बनर्जी के घर का दौरा किया। बंगाल में दो चरण के चुनाव

हो चुके हैं। अभी पांच दौर का चुनाव बाकी है। ममता बनर्जी प्रचार मैदान में नजर आ रही हैं। वह उत्तर बंगाल से शुरू कर राज्य के सभी जिलों में प्रचार कर रही हैं। शनिवार को उनका अभियान आसनसोल से तृणमूल उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा के समर्थन में था। घटनास्थल पर जाते समय हादसा हो गया। हालांकि ममता बनर्जी कार्यक्रम स्थल तक पहुंचने में कामयाब रहीं। आज की बैठक में ममता बनर्जी ने कई मुद्दों को लेकर बीजेपी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि चाहे यहां चॉकलेट बम ही क्यों न फूट जाए, फिर भी सीबीआई, एनआईए, एनएसजी की क्या जरूरत है!



फोटो: बंशीलाल परमार

पेड़ अकेला नहीं कटता ...

बिहार के सीमांचल से पीएम मोदी ने कर दिया ‘खेला’

• वला ‘हिंदू’ धुवीकरण का दांव, 30 सीटों पर पड़ सकता है सीधा असर, ओबीसी को भी साधा



की व्यवस्था करना चाहती है, जिसका संविधान में कहीं कोई प्रावधान नहीं है। पीएम ने कहा कि कांग्रेस इसकी शुरुआत अंबेडकर के संविधान के खिलाफ काम करना चाहते हैं। पीएम ने आरोप लगाया कि कांग्रेस धर्म के आधार पर देश में आरक्षण

होने देंगे। पीएम मोदी शुक्रवार के अररिया के फारबिसगंज में आयोजित अपनी चुनावी सभा में लगभग 10 मिनट तक कांग्रेस के कर्नाटक मॉडल को समझाते रहे। पीएम ने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस ने मुसलमानों को रातों-रात ओबीसी का दर्जा दे दिया।

चाहे वे किस भी तरह के मुस्लिम हो, सभी को ओबीसी बना दिया गया। इसके बाद कांग्रेस की तरफ से मुस्लिमों को भी बांट दिया गया। पीएम ने कहा कि कांग्रेस और राजद मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति कर रहे हैं। पीएम मोदी ने अपने भाषण में कहा कि कांग्रेस के जिस कर्नाटक मॉडल को उन्होंने अररिया के मंच से समझाया है, उसे भाजपा कार्यकर्ता घर-घर में पहुंचाए। साफ है पीएम राज्य की सभी सीटों पर धुवीकरण का कार्ड खेलना चाहते हैं। दो फेज में बिहार में फिलहाल 9 सीटों पर वोटिंग हुई है, 31 सीटों पर फिलहाल बाकी है। ऐसे में पीएम को धुवीकरण के इस कार्ड का लाभ उन्हें बिहार की 31 लोकसभा सीटों पर मिल सकता है। वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण बागी कहते हैं कि पहले विपक्ष ने जिस तरीके से विकास के मुद्दे को डायवर्ट कर संविधान और आरक्षण के खतरे की बात को दोहरा कर मुस्लिम वोटों को गोलबंद करने की कोशिश की।

महाराष्ट्र में मुस्लिमों को टिकट न देकर फंसी कांग्रेस

● अपने ही कर रहे हंगामा, स्टार प्रचारक ने दिया इस्तीफा



मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी की तरफ से लोकसभा चुनाव में कोई भी मुस्लिम उम्मीदवार न उतारने पर हंगामा मचा हुआ है। इसे लेकर कांग्रेस नेता मोहम्मद अरिफ नसीम खान ने पार्टी के स्टार प्रचारक पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद मीडिया ने बातचीत में उन्होंने कहा, पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से मिलकर उन्हें मैं इस बारे में बताऊंगा। आप जानते हैं कि कांग्रेस पार्टी की एक विचारधारा और नीति रही है। चाहे लोकसभा चुनाव हो या विधानसभा चुनाव हो... हर जाति और धर्म के लोगों को प्रतिनिधित्व देने की कांग्रेस की नीति रही है।

डाकुओं के राज में कांग्रेस ने लोगों को लावारिस छोड़ दिया

कांग्रेस ने श्रीराम के आमंत्रण को ठुकराकर महापाप किया है, ये कांग्रेस का अहंकार है : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन



ग्वालियर-गुना। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को ग्वालियर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री भारत सिंह कुशवाह के समर्थन में करेरा विधानसभा एवं गुना लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी व केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में कोलारस विधानसभा के बदरवास एवं बामोरी विधानसभा के म्याना में आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि एक समय चंबल के बीहड़ों में डाकुओं का आतंक था। दिन-दहाड़े डाकु लोगों को उठा ले जाते थे, लेकिन इन डाकुओं के राज में कांग्रेस ने लोगों को लावारिस छोड़ दिया। कांग्रेस की तत्कालीन सरकार उनकी रक्षा तक नहीं कर पाई। इसके बाद भाजपा की सरकार ने चंबल के बीहड़ों से डाकुओं का पूरा सफाया कर दिया और अब ऐसा ही सफाया कांग्रेस पार्टी का भी करना है। कांग्रेस पार्टी वोट की भूखी है। देश के जवानों और देश के किसानों को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने उनका सम्मान दिलाया। हमारी सरकार गरीबों की सरकार है, सबको साथ लेकर चलने वाली सरकार है।

कांग्रेस के माथे पर कलंक है, कांग्रेस के लोग अहंकारी हैं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस ने श्रीराम के आमंत्रण को ठुकराकर महापाप किया है, ये कांग्रेस का अहंकार है। कांग्रेस के नेता हमेशा से श्रीराम मंदिर के निर्माण में अड़ंगा लगाते रहे। उन्होंने कभी भी श्रीराम मंदिर की चिंता नहीं की। वे तो श्रीराम मंदिर के नाम पर अपनी राजनीति चलाते रहे, हिन्दु-मुसलमानों के बीच में फूट डालते रहे, लेकिन जब सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आया तो पूरे देश ने उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय का स्वागत किया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर भी कांग्रेस पार्टी ने आपत्ति उठाई। ये कांग्रेस की सोच है। कांग्रेस ने कभी भी देश की चिंता नहीं की, उन्होंने तो सिर्फ एक परिवार को बचाने की चिंता की है।

मुसलमान भी हैं माधवी लता के फैन संकट में ‘भाईजान’

● हैदराबाद में कांटे की टक्कर, ओवैसी के लिए अबकी आसान नहीं है राह

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद की लड़ाई इस लोकसभा चुनाव में काफी रोचक हो चुकी है। बीजेपी ने इस सीट से माधवी लता को अपना कैंडिडेट बनाया है। तेलंगाना के सभी 17 लोकसभा सीटों में सबसे हाईप्रोफाइल हैदराबाद में उनका मुकाबला एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी से है। यह सीट 1984 से ही ओवैसी परिवार के पास है। माधवी लता अपने बयानों से लोकर अपने सामाजिक कार्यों को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में उनकी जमकर तारीफ की थी। 49 साल की माधवी लता पेशे से कारीबारी होने के साथ-साथ समाजसेवी भी हैं और लंबे समय से मुस्लिम-बहुल पुराने शहर में सक्रिय हैं। कोई विशेष राजनीतिक पृष्ठभूमि



नहीं होने के बावजूद माधवी लता अपना सियासी वजूद सबित करने के लिए पूरा जोर लगा रही हैं। पेशेवर भरतनाट्यम नृत्यांगना माधवी लता ने तेलुगु और तमिल फिल्मों में अभिनय भी किया है। वह 2018 में भाजपा में शामिल हो गईं और 2019 में आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में गुंटूर पश्चिम निर्वाचन क्षेत्र से मैदान में उतरीं। हालांकि इस चुनाव में उन्हें हार मिली। मुस्लिम समाज में लोकप्रिय माधवी लता को उम्मीदवार बनाये जाने का एक कारण यह रहा कि वह मुस्लिम महिलाओं के उत्थान के लिए काम करती हैं और उनके बीच काफी लोकप्रिय हैं। साथ ही प्रखर वक्ता होना भी उनके पक्ष में है। माधवी लता निराश्रित मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक मदद भी करती रही हैं। उन्होंने तीन तलाक के खिलाफ अभियान भी चलाया था। खुद माधवी लता दावा करती हैं कि उन्हें चुनाव में मुस्लिम महिलाओं का सहयोग मिलेगा। माधवी लता का दावा है कि वह एक साल से इस निर्वाचन क्षेत्र में काम कर रही हैं।

मशहूर वकील उज्जवल निकम अब बीजेपी की करेंगे ‘पैरवी’

मुंबई नॉर्थ सेंट्रल से मिलाटिकट, पूनम महाजन का पत्ता साफ

मुंबई (एजेंसी)। बीजेपी ने मुंबई उत्तर मध्य लोकसभा क्षेत्र से मौजूदा सांसद पूनम महाजन का पत्ता काट दिया है। बीजेपी ने इस सीट से उज्जवल निकम की उम्मीदवारी की घोषणा की है। इस सीट से महाविकास अघाड़ी की ओर से वर्षा गायकवाड़ को उम्मीदवार बनाया गया है। ऐसे में उत्तर मध्य मुंबई में वर्षा गायकवाड़ बनाम उज्जवल निकम देखने को मिलेगा। कई सालों तक विशेष सरकारी वकील के तौर पर काम करने वाले उज्जवल निकम के नाम पर पिछले कुछ दिनों से चर्चा चल रही थी। कानूनी विद्वान के रूप में पहचाने जाने वाले उज्जवल निकम ने देश के कई महत्वपूर्ण का पत्ता काट दिया है। इसमें निकम ने मुंबई पर 26/11 के आतंकी हमले, 1993 के बॉम्बे सीरियल ब्लास्ट केस, खैरलांजी, सोनाई में दलित उत्पीड़न में अहम भूमिका निभाई। उज्जवल निकम ने 26/11 मुंबई हमले के दोषी आतंकी अजमल कसाब के खिलाफ केस लड़ा था और उसे फांसी दिलाई थी। इससे पहले, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को असम के गुवाहाटी में प्रेस कॉन्फ्रेंस की।

88 साल की उम्र में संकट मोचन मंदिर में अपनी हाजिरी लगा गयी थी गिरिजा देवी

संकट मोचन संगीत समारोह

राजेन्द्र शर्मा

साल 2017 का माचं। ठुमरी क्वीन कही जाने वाली गिरिजा देवी होली के अवसर पर बनारस के नाटी इमली स्थित अपने घर आई हुई थीं। संकट मोचन मंदिर के महंत विशम्भर नाथ मिश्र के परिवार की तीन पीढ़ियों से गिरिजा देवी से आत्मीयता रही। महंत मिश्र ने गिरिजा देवी के सम्मान में तुलसी घाट पर एक आयोजन किया। आयोजन समाप्ति के बाद जब महंत विशम्भर नाथ मिश्र उन्हें गाड़ी तक छोड़ने आए तो अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सके। उन्होंने गिरिजा देवी से शिकायत भरे लहजे में कहा कि हनुमान जयंती के अवसर पर संकट मोचन संगीत समारोह के आयोजन की परम्परा को तिरानवे वर्ष हो चुके हैं, इस परम्परा की नींव रखने वाले मेरे बाबा (महंत अमरनाथ मिश्र) को आप भाई जी कहती हैं परन्तु इस संगीत समारोह में बस केवल एक बार 2005 में आपने हाजिरी लगाई है, यह बात मुझे सालती है। इतना कहते-कहते महंत विशम्भरनाथ मिश्र भावुक हो गए। गिरिजा देवी को संवधाओं को निभाना बखूबी आता था। उन्होंने महंत विशम्भर नाथ मिश्र के मनुखर को उसी भावना से समझा, जिस भावना से महंत विशम्भर नाथ मिश्र ने अपनी बात कही थी। महंत अमरनाथ मिश्र का जिक्र होने पर वह स्वयं भी भावुक हो गईं। महंत विशम्भर नाथ मिश्र का

भाजपा ने लोकतंत्र को बचाने वाले संस्थानों को किया कमजोर

प्रियंका गांधी बोलीं- प्रधानमंत्री मोदी अहंकारी, लोग उनसे डरते हैं

वलसाड़ (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने शनिवार को गुजरात के वलसाड़ में कांग्रेस कैडिडेट अनांत पटेल के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान प्रियंका ने मोदी सरकार पर

● **कहा-मेरी दादी-पिता को लोग डांट देते थे, लेकिन वो नाराज नहीं होते थे**

जमकर हमला बोला। प्रियंका ने कहा-पीएम मोदी अहंकारी हैं। उनके आस-पास रहने वाले लोग पीएम से डरते हैं। मोदी को कोई कुछ नहीं बोल सकता। हम सत्ता में रहे हैं, इसलिए समझते हैं। हमारे परिवार से दो-दो



प्रधानमंत्री रहे हैं। प्रियंका ने कहा- जब मैं छोटी थी तो इंदिरा दादी और पिता राजीव गांधी के साथ घूमने जाती थी। मैं देखती थी कि उनके संसदीय क्षेत्र के लोग उन्हें काम को लेकर डांट देते थे, लेकिन वो नाराज नहीं होते थे, क्योंकि उनमें अहंकार नहीं था। कांग्रेस नेता ने कहा- जिस नेता में अहंकार होता है, उसका पतन निश्चित है। मोदी जी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन उनके पास गरीब जनता के लिए कुछ नहीं है। सरकार के पास जो

है, वो अडाणी-अंबानी जैसे करोड़पतियों के लिए है। प्रियंका ने कहा- भाजपा लोगों को कमजोर करने और उनके अधिकारों से वंचित करने के लिए संविधान को बदलना चाहती है। इसी संविधान ने हमें सभी अधिकार दिया है। भाजपा लोकतंत्र को कमजोर करना चाहती है। कांग्रेस नेता ने कहा- भाजपा ने लोकतंत्र को बचाने वाले संस्थानों को कमजोर किया है। जब हमारी सरकार थी, तो मीडिया हर रोज हमसे सवाल करती थी। किसी ने उन्हें रोका नहीं। जेल में नहीं डाला। आज पूरी मीडिया बिकी हुई है। प्रियंका ने कहा- आज जिन-जिन राज्यों में हमारी सरकार है, वहां हमने अपनी सभी गारंटी को पूरा किया है। अगर आप फिर से मोदी सरकार लाएंगे तो आने वाले पांच साल में भी आपके जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा। कोई प्रगति नहीं होगी।

उत्तराखंड के जंगल में आग बुझाने में अब जुट गए एम-17 हेलीकॉप्टर

नैनीताल में हाईकोर्ट कॉलोनी के करीब तक पहुंचीं लपटें, सीएम धामी ने बैठक बुलाई

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में नैनीताल के जंगलों में लगी आग बेकाबू हो गई है। 4 दिन से लगी आग की लपटें नैनीताल में हाईकोर्ट कॉलोनी से कुछ दूर तक पहुंच गईं। इसके बाद वन विभाग के कर्मचारी, फायर ब्रिगेड, पुलिस के साथ-साथ सेना के जवान भी आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं। एयरफोर्स का एम - 17 हेलीकॉप्टर से भी पानी की बोछार की जा रही है। लेकिन, गर्मी की वजह से आग लगातार बढ़ती जा रही है। शनिवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी भी हेलिपैड पर पहुंच गए। उन्होंने अफसरों की एक इमरजेंसी बैठक बुलाई। इसमें आग बुझाने के तरीकों पर मंथन किया



जाएगा। प्रशासन के मुताबिक, शुरुआत में 31 बड़ी आग लगने की घटनाएं हुई हैं। इनमें सबसे बड़ा मामला नैनीताल में भीमताल के नजदीक पहाड़ों का रहा। जंगल में जहां आग लगी है वहां से कुछ दूरी पर आर्मी का क्षेत्र भी है। इसलिए आर्मी भी आग बुझाने में जुटी है।

मणिपुर में कुकी उग्रवादियों ने फिर खेला ‘खूनी’ खेल

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर से फिर हिंसा की खबरें सामने आ रही हैं। नारानसेना इलाके में शनिवार को आधी रात से लेकर 2.15 बजे तक कुकी उग्रवादियों ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) पर घात लगाकर लगातार हमले किए। इस हमले में दो जवानों की जान चली गई। मणिपुर पुलिस ने कहा कि ये जवान राज्य के बिष्णुपुर जिले के

● सीआरपीएफ बटालियन पर किया हमला, 2 जवान शहीद

नारानसेना इलाके में तैनात सीआरपीएफ की 128वीं बटालियन के हैं। इससे पहले मणिपुर के कांगपोकपी जिले में बोते बुधवार को एक शक्तिशाली विस्फोटक उपकरण (आईईडी) में विस्फोट होने से इंफाल-माओ राजमार्ग का पुल क्षतिग्रस्त हो गया, जिसके कारण राजमार्ग पर वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से रोक दी गयी। पुलिस ने कहा कि इंफाल-माओ राजमार्ग पर आवाजाही पूरी तरह से रोक दी गई और पुल के दोनों ओर लगभग 200 वाहन फंसे हुए हैं। पुलिस के मुताबिक,

विस्फोट से पुल में करीब तीन छेद हो गए। गौरतलब है कि तीन मई 2023 से अलग-अलग समय पर विभिन्न कुकी संगठनों द्वारा राजमार्ग को अवरुद्ध कर दिया गया है और मतेई लोगों की आवाजाही रोक दी गई थी। फिलहाल यह पता नहीं चल पाया है कि



धमाके के पीछे किसका हाथ है। यह विस्फोट जातीय हिंसा प्रभावित राज्य में 26 अप्रैल को लोक सभा चुनाव के लिए दूसरे चरण में होने वाले मतदान से कुछ दिन पहले हुआ था। इससे पहले 16 अप्रैल को तामेंगलांग में तेल टैंकरों पर संदिग्ध कुकी उग्रवादियों द्वारा गोलीबारी के बाद इंफाल से ज़िरीबाम राजमार्ग पर आवाजाही बाधित हुई थी।

भाजपा ने गूगल-यूट्यूब को दिए 102 करोड़ के विज्ञापन

● 6 साल में पब्लिश पॉलिटिकल एडवर्टाइजमेंट में बीजेपी के 73 फीसदी, सबसे ज्यादा 10.8 करोड़ कर्नाटक पर खर्च

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा गूगल और यूट्यूब पर विज्ञापन के लिए 100 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करने वाली पहली भारतीय पॉलिटिकल पार्टी बन गई है। गूगल की विज्ञापन ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट के मुताबिक, 31 मई 2018 से 25 अप्रैल 2024 तक भाजपा ने 102 करोड़ रुपए विज्ञापन के लिए खर्च किए हैं। पिछले पांच सालों में पब्लिशड गूगल विज्ञापन में भाजपा का हिस्सा करीब 26 फीसदी है। इस दौरान कुल 390 करोड़ रुपए के पॉलिटिकल विज्ञापन पब्लिश हुए हैं। इस दौरान कुल 2.17 लाख ऑनलाइन एड दिए गए हैं। इनमें से कुल 1.61 लाख एड (73 फीसदी) राजनीतिक विज्ञापन कैटेगरी के तहत भाजपा के थे। भाजपा ने कर्नाटक में सबसे ज्यादा 10.8 करोड़ रुपए के एड दिए हैं। इसके बाद उत्तर प्रदेश के लिए पार्टी ने 10.3 करोड़, राजस्थान के लिए 8.5 करोड़ और दिल्ली के लिए 7.6 करोड़ रुपए के विज्ञापन दिए हैं। वहीं, लोकसभा चुनाव 2024 के पहले और दूसरे फेज के दौरान भाजपा से ज्यादा खर्च कांग्रेस ने किया है।



हाथ अपने हाथों में लेते हुए वादा किया कि जो हुआ, सो हुआ; पर अब जब तक मेरा जीवन है मैं संकट मोचन संगीत समारोह में जरूर हाजिरी लगाऊंगी। उस समय नाटी इमली के पड़ोसी यही मान रहे थे कि अब वे दशहरे पर ही आएंगी किन्तु गिरिजा देवी तो वचन की पक्की। महंत विशम्भरनाथ मिश्र को दिये अपने वचन को निभाने अप्रैल में हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित चौरानवे संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगाने बनारस आ पहुंचीं। गद्गद हो उठे महंत विशम्भर नाथ मिश्रा। चौरानवे संकट मोचन संगीत समारोह के अन्तिम दिन 20 अप्रैल, 2017 को गिरिजा देवी ने अपनी प्रस्तुति दी। गिरिजा देवी संकट मोचन संगीत समारोह में अपने सुरों की हाजिरी

लगाने के लिए 1949 से बेताब थीं परन्तु उस समय महिला कलाकारों के इस समारोह में प्रस्तुति पर बंदिशें थीं। संकट मोचन संगीत समारोह में महिला कलाकारों के हाजिरी लगाने का सिलसिला 1977 में तत्कालीन महंत वीरभद्र मिश्र ने शुरू कराया और कंकना बनर्जी ने पहली महिला कलाकार के रूप में अपनी हाजिरी लगाई। लेकिन उस समय गिरिजा देवी के पति के निधन के बाद वह गहरे दुख में डूबी थीं। बाद में वे आईटीसी संगीत कला अकादमी कलकत्ता चली गयी और संकट मोचक संगीत समारोह में केवल साल 2005 को छोड़कर गिरिजा देवी अपनी हाजिरी लगा सकें, यह संयोग न बन सका। 20 अप्रैल, 2017 को 88 बरस की उम्र में अपनी अपनी हाजिरी लगाने आई गिरिजा देवी को उस दिन बैठने में तकलीफ थी, लेकिन उस

तकलीफ के साथ शुरूआती कुछ देर में उन्होंने जो बातें कहीं, उसमें इस संगीत समारोह के उद्देश्य को एकदम साफ कर दिया। हुआ यह कि जब अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन तीन-चार भजनों के बाद गुज़ल सुना देते हैं, जब दरगाह अजमेर शरीफ के कव्वाल हमसर हयात निजामी आते हैं और मंदिर सूफी दरगाह जैसा गुंजन लगता है और जब उस्ताद राशिद खान आते हैं और लोग उनसे 'आओगे जब तुम साजना' की फरमाइश कर रहे थे। गिरिजा देवी ने कहा कि हर तरह के संगीत को अपनी जरूरत है और उसके अपने श्रोता हैं। सभी को बराबर सुनना चाहिए और समय देना चाहिए, भजन सुनते हैं तो गुज़ल भी सुनना चाहिए। चौरानवे संकट मोचन संगीत समारोह की समाप्ति के बाद महंत विशम्भर नाथ मिश्र आश्चर्य थे कि गिरिजा देवी अब हर बार इस समारोह में अपनी हाजिरी लायांगी परन्तु उस समय किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि अगले बरस गिरिजा साक्षात नहीं होगी, केवल उनकी स्मृतियां होगी। 24 अक्टूबर, 2017 को गिरिजा देवी प्रभुधाम उनकी हो गयीं। महंत विशम्भर नाथ मिश्र उस पल को याद करते हैं जब गिरिजा देवी ने उन्हें वचन दिया था कि जब तक मेरा जीवन है मैं संकट मोचन संगीत समारोह में जरूर हाजिरी लगाऊंगी। महंत मिश्र कहते हैं कि अपने वचन को पूरी तरह निभा गयी गिरिजा देवी। गिरिजा देवी की वचनबद्धता के आगे नतमस्तक महंत मिश्र ने 2017 की देव दीपावली के अवसर पर तुलसी घाट पर गिरिजा देवी को स्मृति में संकट मोचन फाउंडेशन की ओर से एक बड़ा आयोजन किया, जिसमें गंगा की रेत से अपना जी की 51 फीट ऊंची प्रतिमा तैयार की गयी और गिरिजा देवी की शिष्या मालिनी अवस्थी ने अपनी स्वरजालि प्रस्तुत कर अपनी गुरु मां को शिद्दत से याद किया।

परिक्रमा

लोकसभा : गिरते मत प्रतिशत से हैरान-परेशान राजनेता



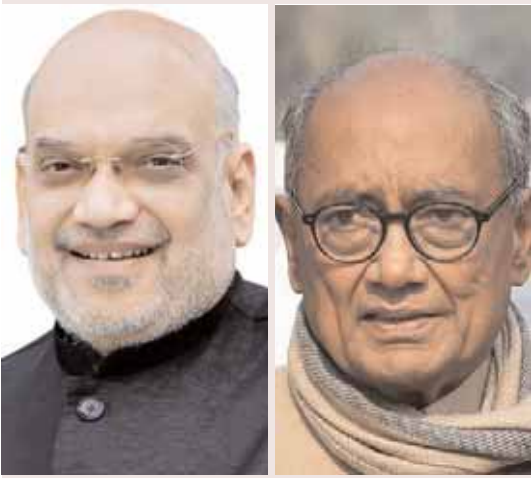
अरुण पटेल

लेखक सुबह सवरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

एक-दूसरे पर ताबड़तोड़ शब्दिक मिसाइल छोड़ते राजनेता जहाँ चुनावी माहौल को सियासी गमी की चरम सीमा तक ले जा रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर मतदान के प्रति मतदाताओं की उदासीनता उन्हें गहरे तक हिला कर रख रही है। उनके चेहरे पर हैरान-परेशान होने वाले भाव सामने आ ही जाते हैं। भले ही राजनेता एक सफल अभिनेता की तरह अपने चेहरे के भावों को छुपाने की कोशिश कर रहे हों लेकिन उनके मुंह से निकले शब्दिक तीर यह बताते के लिए पर्याप्त हैं कि कहीं न कहीं अंदर ही अंदर वे मतदाताओं की बेरुखी से हिले हुए हैं। इस बात को लेकर भी वे निश्चित नहीं हैं कि कम मतदान उनके पक्ष में फैसला लायेगा या उनके खिलाफ जायेगा। इसी बीच देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पर शक को बेबुनियाद मानते हुए याचिका को खारिज कर दिया तथा आदेश दिया कि ईवीएम पंचियों का शत-प्रतिशत न तो मिलान होगा और न ही वैलेट से वोटिंग होगी।

लोकसभा चुनाव के लिए दूसरे चरण के मतदान में देश में 88 सीटों पर 1206 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला ईवीएम में बंद हो गया है। प्रथम चरण में 102 सीटों पर प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला पूर्व में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में कैद हो चुका है। कहीं चिलचिलाती धूप तो कहीं वारिश के बीच 12 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की 88 सीटों पर 68.04 प्रतिशत मतदान हुआ जो कि पिछले चुनाव से 4.13 प्रतिशत कम रहा। 2019 में यह 72.87 प्रतिशत था। चुनाव आयोग और पार्टियों के मतदान बढ़ाने के प्रयास का भी कोई विशेष असर नजर नहीं आया। यहां तक कि द्वितीय चरण के मतदान से पूर्व केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भोपाल में मध्यप्रदेश के नेताओं को दो-टुक शब्दों में चेतावनी दी थी, उन्होंने साफ-साफ कहा था कि जिन मंत्रियों के इलाकों में मतदान प्रतिशत कम होगा उनका मंत्री पद चला जायेगा और बदले में उन विधायकों को मंत्री बनाया जायेगा जिनके क्षेत्र में मतदान प्रतिशत बढ़ेगा। गुरुवार 25 अप्रैल देर रात भोपाल आये शाह दूसरे दिन शुक्रवार को राजगढ़ और गुना चले गये। ऐसा समझा जाता है कि भाजपा चुनाव प्रबंधन से जुड़े नेता यह मानते हैं कि विधायक केवल औपचारिकता कर रहे हैं और कार्यकर्ता भी बहुत उसाहा से काम नहीं कर रहे। द्वितीय चरण का मतदान समाप्त होने के बाद प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वी.डी. शर्मा ने लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति की 27 अप्रैल शनिवार को बैठक बुलाकर मतदान की समीक्षा की और आगामी दोनों चरणों की चुनावी तैयारियां पर जरूरी दिशा निर्देश दिये। भाजपा को अब और अधिक चाक-चौबंद रहने और मतदान का

प्रतिशत बढ़ाने के लिए पूरी ताकत लगाना इसलिए जरूरी है क्योंकि मालवा-निमाड़ और मध्यभारत में मतदान होना है और यह वही इलाका है जहां पर भाजपा की मजबूत पकड़ है। यहां भी मतदान के प्रति यदि मतदाताओं में जोश नहीं भरा जा सका तो पार्टी को बड़ा नुकसान हो सकता है, अब ऐसा माना जाता है कि भाजपा अपनी पूरी ताकत इन इलाकों में मतदान केंद्रों तक झोंकने वाली है ताकि उसे किसी प्रकार की राजनीतिक जोखिम का सामना न करना पड़े।



एक तरफ देश में जहां मतदाता मतदान कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर ईवीएम पर उठे सवालों पर अपना दो-टुक फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को भी निर्देश जारी कर दिये और ऐसा समझा जाता है कि इस प्रकार के निर्देश पहली बार दिये गये हैं। इसमें पहला निर्देश यह है कि 1 मई और उसके बाद से सिंबल लोडिंग यूनिट -एसएलयू- को चुनाव नतीजे घोषित होने के 45 दिन तक स्टंग रूप में सील रखना होगा। यह वह मेमोरी यूनिट है जिसे कम्प्यूटर से कनेक्ट कर सिंबल नोट किये जाते हैं। वीवीपेट में प्रत्याशी का सिंबल डालने में एसएलयू जरूरी है। यह भी निर्देश दिया गया है कि परिणाम से असंतुष्ट होने पर सात दिन में दूसरे व तीसरे नम्बर पर रहे प्रत्याशी हर विधानसभा क्षेत्र की पांच प्रतिशत ईवीएम में बर्न मेमोरी माइक्रो कंट्रोलर की जांच का आवेदन कर सकेंगे। ईवीएम कंपनी के इंजीनियर माइक्रो कंट्रोलर को वेरीफाय करेंगे। जांच खर्च प्रत्याशी उठायेगा, लेकिन

यदि जांच में गड़बड़ी पाई गई तो फीस वापस मिल जायेगी। यह भी निर्देश दिया गया कि चुनाव आयोग वीवीपेट की पंचियों की गिनती के लिए मशीन के उपयोग पर विचार करे कि क्या चुनाव चिन्ह के साथ हर पार्टी के लिए बार-कोड हो सकता है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की पीठ ने गैर सरकारी संगठन एशोसिएश न फार डेमोक्रेटिंग रिफार्म व कुछ अन्य याचिकाकर्ताओं की ओर से दाखिल याचिकाओं में की गयी इस मांग को खारिज कर दिया कि वैलेट पेपर से चुनाव करायें या



सभी वीवीपेट पंचियों का ईवीएम से मिलान किया जाए। जस्टिस खन्ना ने अपने 38 पेज के फैसले में कहा है कि वर्तमान चुनाव प्रक्रिया में प्रदर्शित है, मतदाता वोट देते समय वीवीपेट पच्ची को देख सकता है इसके बाद पच्ची बाक्स में गिर जाती है इसलिए याचिकाओं में अपारदर्शिता का तर्क गलत है। 18 पेज के अलग से लिखे गये फैसले में जस्टिस दत्ता ने कहा है कि हाल के कुछ वर्षों में निहित स्वार्थों वाले समूहों द्वारा राष्ट्रीय उपलब्धियों को कमजोर करने का ट्रेंड बढ़ रहा है, इन्हें खत्म करना होगा। इसलिए पेपर वैलेट प्रणाली पर लौटने का प्रश्न ही नहीं उठता। फैसले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह फैसला कांग्रेस और विपक्षी पार्टियों पर करारा तमाचा है, इनके सपने टूट गये हैं। वहीं कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी वीवीपेट के अधिक उपयोगी इस्तेमाल के अपने अभियान को बढ़ाती रहेगी।

‘दिग्गी’ पर गरजते-बरसते अमित शाह

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के निशाने पर चुनावी सभाओं में मुख्यरूप से कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह रहे, जो राजगढ़ लोकसभा सीट को भाजपा से छीनने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस कहती है कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुस्लिमों का है और मैं आज गुना की धरती पर यह कह कर जाता हूं कि इस देश के संसाधनों पर गरीब, दलित, ओबीसी और आदिवासियों का पहला अधिकार है। कांग्रेस ने 70 सालों तक राम मंदिर का मुद्दा दबाकर रखा और इसी तरह जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 की गोद में खेलती रही। लेकिन मोदी जी ने इसे एक झटके में खत्म कर दिया। कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह के निर्वाचन क्षेत्र में अमित शाह ने उन पर तपाड़ हमला बोलते हुए उन्हें मध्यप्रदेश का बंटोदार करने वाला बताया और कहा कि दिग्विजय सिंह की राजनीति से स्थायी बिदाई कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दिग्गी आतंकियों को 'जी' कहते हैं जाकिर को गले लगाते हैं। उन्होंने मतदाताओं से दिग्विजय सिंह की ओर इशारा करते हुए कहा कि "आंशिक का जनाजा है जय धूमधाम से निकले", दिग्विजय सिंह बड़े आदमी हैं उनका बड़ा सम्मान है इसलिए बड़ी लीड से हराकर उन्हें पर बिठाना है।

और यह भी

गुना-शिवपुरी लोकसभा क्षेत्र में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में ज्योतिरादित्य सिंधिया को भारी मतों से पराजित कर 2019 का लोकसभा चुनाव जीतने वाले के.पी. यादव को भाजपा ने टिकट नहीं दी और उनकी जगह पर ज्योतिरादित्य सिंधिया को अपना उम्मीदवार बनाया है क्योंकि सिंधिया ने 2020 में भाजपा में आकर प्रदेश में उसकी सरकार बनवा दी थी। सिंधिया को राज्यसभा की सदस्यता मिली, केंद्र में मंत्री पद मिला और अब उन्हें ही यहां से पार्टी ने उम्मीदवार बनाया है। हालांकि के.पी. यादव ने कोई बगावती तेवर नहीं अपनाये हैं लेकिन कांग्रेस ने वहां से यादव उम्मीदवार बनाकर इस क्षेत्र में यादव मतदाताओं में संघ लगाने की कोशिश की है। पार्टी नेताओं के बीच चल रही अदरनी खींचतान दूर करने की कोशिश करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि के.पी. यादव को चिन्ता छोड़िए, उन्होंने गुना क्षेत्र की काफी सेवा की है इसलिए उनका ध्यान पार्टी रखेगी। यादव के भविष्य और उन्हें आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भाजपा की है। गुना की जनता को के.पी. यादव और ज्योतिरादित्य सिंधिया दोनों नेता मिलेंगे। उल्लेखनीय है कि सिंधिया के भाजपा में आने के बाद भी के.पी. यादव और ज्योतिरादित्य सिंधिया तथा उनके समर्थकों की पटरी नहीं बैठी। शायद इसीलिए अमित शाह को सार्वजनिक तौर पर आश्वासन देना पड़ा।

यू.के. कॉन्वेट स्कूल की छात्र-छात्राओं ने बोर्ड परीक्षाओं में किया सराहनीय प्रदर्शन

लक्ष्य ने 10वीं में प्राप्त किए 91.2 प्रतिशत अंक



भोपाल (नप्र)। नीलबढ़ स्थित यू.के. कॉन्वेट को.एड.हायर सेकेण्डरी स्कूल में बोर्ड परीक्षा 2023-24 में छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कक्षा 10 में लक्ष्य कुमार सिंह ने 91.2 प्रतिशत अंक लाकर स्कूल का गौरव बढ़ाया। वहीं 15 छात्र-छात्राओं ने प्रथम श्रेणी में स्थान पाया। अन्य कक्षाओं के छात्र-छात्राओं ने भी प्रशंसनीय प्रदर्शन किया, जिसमें कक्षा 8वीं में अनामिका कुशवाह ने 81 प्रतिशत, सलोनी सिंह ने 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कक्षा 5 में निर्माता तोमर ने 85.75 प्रतिशत, प्रियंशी पटेल ने 85 प्रतिशत एवं आरध्या तोमर ने 80. 5 प्रतिशत अंक लाकर अपने स्कूल का गौरव बढ़ाया। सभी छात्र-छात्राओं ने स्कूल के सभी शिक्षिकाओं का तहेदिल से आभार व्यक्त करते हुए कहा हमारे गुरुजनों के मार्गदर्शन के कारण ही हम अच्छा प्रदर्शन कर सके। स्कूल की प्राचार्य व शिक्षिकाओं ने इन छात्र-छात्राओं की प्रशंसा कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा आगे भी वह स्वयं का और स्कूल के साथ हम शिक्षकों का गौरव भी बढ़ाते रहेंगे।

प्रशांत भूषण बोले-सरकार ने चंदा लेकर घातक दवाएं चलने दीं

बीजेपी को करप्ट कंपनियों ने इलेक्टोरल बॉन्ड दिया , सीबीआई, ईडी के दुरुपयोग की आशंका

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट प्रशांत भूषण ने भोपाल में कहा, जिन कंपनियों ने इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए बीजेपी को करोड़ों रुपए दिए हैं, वे किसी न किसी करणान में शामिल रहें हैं। बीजेपी की सरकार इन कंपनियों से चंदा लेकर क्लीनचिट दे सकती है, इसलिए उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है। इसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया है। अगले हफ्ते सुनवाई है।

प्रशांत ने शनिवार को भोपाल के गांधी भवन में मीडिया से चर्चा में कहा, कोर्ट से एसआईटी गठित कर जांच कराने की मांग की है। सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज, सीबीआई, ईडी के रिटायर्ड अधिकारियों की टीम को इसमें शामिल करने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा, रेमंडेसिवर दवा बनाने वाली जायडस कैडिला (अहमदाबाद की कंपनी) जैसी 20 से अधिक कंपनियों की दवाओं को जनता के लिए घातक होने के बाद भी देश में इसलिए चलने दिया गया, क्योंकि इन कंपनियों ने इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए बीजेपी को पैसा दिया था। यह कंपनी गुजरात की है और इसके विरुद्ध खतरनाक दवा बनाने की रिपोर्ट आने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। **सीबीआई, ईडी के दुरुपयोग की आशंका, इन्होंने कार्रवाई नहीं की-** प्रशांत भूषण ने कहा, 16 हजार करोड़ का



जो पैसा दिया गया है, उसका अधिकतम हिस्सा घूस के तौर पर दिया गया। इसमें सीबीआई, ईडी जैसी सरकारी संस्थाओं का दुरुपयोग किए जाने की भी आशंका है। दरअसल, इनके जरिए किसी भी कंपनी के खिलाफ अब तक कार्रवाई शुरू नहीं की गई है। सीबीआई, ईडी और दूसरी जांच एजेंसियों का उपयोग इन कंपनियों पर दबाव बनाने के लिए भी किए जाने की आशंका है, इसलिए वे नहीं चाहते कि केंद्र के अधीन संस्थाएं कंपनियों की जांच करें। सामाजिक कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज (लेफ्ट से दूसरी) ने कहा कि 2जी स्पेक्ट्रम की जिम्मेदार कंपनी ने भी बीजेपी को इलेक्टोरल बॉन्ड दिए हैं।

अंजलि भारद्वाज बोलीं- 40 प्रतिशत बॉन्ड बीजेपी को दिया गया-

राष्ट्रीय जन सूचना अधिकार अभियान (एनसीपीआरआई) की ओर से यह प्रेस कॉन्फ्रेंस रखी गई। सामाजिक कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज ने कहा, इलेक्टोरल बॉन्ड अनकास्टिटेयुशनल है। यह बात खुद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण कह चुकी हैं कि फिर उनकी सरकार बनी तो कास्टिटेयुशन बदल देगी। उन्होंने कहा, जो कंपनियां लाभ पाने वालों में शामिल हैं, उनके द्वारा 40 प्रतिशत बॉन्ड बीजेपी को दिया गया है। सीधा सवाल उठता है कि अगर कंपनियों की मंशा सही थी तो सिर्फ बीजेपी को ही क्यों बॉन्ड दिया गया? बाकी पार्टियों को बॉन्ड क्यों नहीं दिए गए? भारद्वाज ने दूजी मामले का जिक्र करते हुए कहा, केंद्र सरकार सुप्रीम कोर्ट गई है कि 2जी का फैसला बदल दी जाए।

लोकसभा निर्वाचन-2024

प्रत्येक मतदान केन्द्र पर ‘चलें बूथ की ओर’ अभियान चलायें

तीसरे चरण के 20456 मतदान केंद्रों पर चलेगा अभियान

तीसरे चरण में प्रदेश के 9 लोकसभा क्षेत्रों में मतदान होना है। इसके अंतर्गत आने वाले 20 हजार 456 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलाया जाएगा। इसमें बैतूल, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल और राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र शामिल हैं।

चौथे चरण के 18007 मतदान केंद्रों पर चलेगा अभियान

चौथे चरण में प्रदेश के 8 लोकसभा क्षेत्रों के 18 हजार 7 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलाया जाएगा। इसमें देवास, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम, धार, इंदौर, खरगोन, खंडवा लोकसभा क्षेत्र शामिल हैं।

तीसरे चरण के सभी 9 संसदीय क्षेत्रों में शांतिपूर्ण मतदान की तैयारी पूर्ण : श्री राजन

भारत निर्वाचन आयोग के उप निर्वाचन आयुक्त ने की निर्वाचन तैयारियों की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। लोकसभा निर्वाचन-2024 के अंतर्गत तीसरे चरण के सभी 9 लोकसभा संसदीय क्षेत्रों में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गयी हैं। सभी मतदान केंद्रों पर पेयजल, जरूरी दवाइयां और ऐन्ट की व्यवस्था की जा रही है। मतदाता सूचना पच्ची का वितरण कराया जा रहा है। मुरैना में जरूरत अनुसार फोर्स उपलब्ध कराया जायेगा। मतदान प्रतिशत बढ़ाने के भी प्रयास लगातार किये जा रहे हैं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने यह बात भारत निर्वाचन आयोग के उप निर्वाचन आयुक्त श्री अजय भादू द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से की गई निर्वाचन तैयारियों की समीक्षा में कही। श्री राजन ने बताया कि प्रदेश में कुल 871 नाके बनाये गये हैं, जहां पर सतत निगरानी की जा रही है। लगातार जब्ती की कार्यवाही की जा रही है।

भारत निर्वाचन आयोग के उप निर्वाचन आयुक्त श्री अजय भादू ने मुरैना, भिण्ड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल, राजगढ़ और बैतूल संसदीय क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक, पुलिस प्रेक्षक और व्यव प्रेक्षक से अलग- अलग चर्चा कर निर्वाचन तैयारियों की जानकारी ली।

अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजेश कौल, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री बसंत कुरें और स्टेट पुलिस नोडल ऑफिसर श्री अंशुमन सिंह भी उपस्थित रहे।



भोपाल में पहली बार नाटक का टिकट 500 रुपए

रंगकर्मी बालेंद्र सिंह बोले- कमर्शियल थिएटर की तरफ यह हमारा पहला कदम

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पहली बार एक ऐसा नाटक होने जा रहा है जिसको देखने के लिए 500 रुपए का टिकट लेना होगा। हम बात कर रहे हैं निर्देशक हबीब तनवीर के नाटक ‘ आगरा बाजार ’ की। जिसका मंचन 28 अप्रैल को होगा। इसका हम थिएटर रूप द्वारा परफॉर्म किया जाएगा।

हम थिएटर से वरिष्ठ रंगकर्मी और बॉलीवुड कलाकार बालेंद्र सिंह ने इस बारे में बात करते हुए कहा कि यह धीरे-धीरे आदत में आएगा। शुरुआत तो हमें करनी होगी तो यह कदम मैने उठया है। मैं कमर्शियल थिएटर बनाने कि कोशिश कर रहा हूं। कहूंगा कि कलाकार अच्छे से अच्छ परफॉर्मंस करें ताकि दर्शक मुंह मांगी कीमत देकर नाटक देखें। इसे यह भी कह सकते हैं कि यह कमर्शियल थिएटर की और भोपाल का पहला कदम है। इस नाटक के टिकट बुक माई शो पर उपलब्ध हैं।

बालेंद्र ने बताया कि अनुदान होने से लोग ज्यादा कमर्शियल शो या टिकट शो की तरफ नहीं जा रहे है। कमर्शियल एस्पेक्ट से जो भी लोग नाटक कर रहे है तो मेरा यही कहना है कि अच्छे से परफॉर्म करें क्योंकि इसके आपको पैसे मिल रहे है। तो उसका आपको अच्छा उपयोग करना चाहिए, अच्छ नाटक बनाना चाहिए। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सरकार हमें



प्रोत्साहित कर रही है तो नाटक कर्मियों का भी फुर्ज है कि अच्छे नाटक बनाए और जनता के सामने उसे टिकट पर प्रस्तुत करे।

200 रुपए के टिकट में नहीं आई थी पब्लिक

इससे पहले बालेंद्र सिंह ने एक और नाटक ‘पॉपकॉर्न’ का मंचन 21 अप्रैल को भोपाल में किया था। जिसको देखने के लिए इक्का दुक्का लोग ही पहुंचे थे। इस नाटक में 200 रुपए का टिकट रखा गया था। यह पहली बार था कि शहर में किसी नाटक के लिए टिकट रखी गई थी। बालेंद्र का इस मामले में कहना है कि मेरे लेटेस्ट प्ले पॉपकॉर्न के लिए जब मैंने 200 रुपए का टिकट रखा तो दर्शक की संख्या कम हो गई। कम संख्या के बावजूद भी मेरी परफॉर्मंस में कोई कमी नहीं आई। मैने वैसे ही परफॉर्मंस किया जैसा मैं 100 लोगों के सामने करता हूं।

दिल्ली-मुंबई में ढाई हजार तक का टिकट लेते हैं दर्शक

बालेंद्र कहते हैं कि भोपाल में 500 रुपए की टिकट पर इतना बवाल हो गया। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, गुजरात जैसे शहरों में यह राशि बहुत आम बात है। यहां लोग हजार से लेकर ढाई हजार तक के टिकट लेते हैं। टिकट में भी बैक-टू-बैक एक दिन के 3 शो में भी हाउस फुल होता है। मेरी यह कोशिश है कि भोपाल में इतना तो नहीं पर कुछ थिएटर का कल्चर आए। जैसे बैक-टू-बैक दो शो, हाउस फुल शो की प्रथा लागू कर सकूं। मैं लोगों को प्रोत्साहित कर सकूं कि वह अच्छ थिएटर करें। आगरा बाजार नाटक के 28 अप्रैल को 2 शो होंगे।

हमने पहले कैल्कुलेशन किया, फिर तय की फीस

रंगकर्मी बालेंद्र सिंह ने बताया कि आगरा बाजार हमारे गुरु का एक नायाब नाटक है। यह बहुत कम मंचित हुआ है। केवल सरकारी संस्थान ही इसका मंचन करवाती हैं। 10 साल बाद जब हमारे थिएटर ग्रुप ने रिवाइज किया तो हमें लगा कि ऐसा एक नाटक भोपाल में करना चाहिए। जब पैसे का सोचा तो हमारे पास इतना फंड नहीं था, कि नाटक हो पाए। हमने कैल्कुलेशन किया तो इसका जवाब मिला कि 500 रुपए की टिकट में दो शो करते हैं। जिससे इस नाटक का पूरा खर्चा निकल जाएगा। बालेंद्र सिंह टिकट शुल्क की दूसरी वजह भी बताते हैं। कहते हैं कि क्यों हम किसी से अनुदान या स्पॉन्सरशिप ले। इसकी जगह हम जनता से सहयोग लेकर उन्हें ही ऐसी प्रस्तुति दें, जैसे कि वे पिकर देख रहे हो।

कला
 पंकज तिवारी
कला समीक्षक



कला, कला ही है फिर चाहे भारतीय कला हो, पेरिस की कला हो या अन्यत्र कहीं की कला हो। कार्य लगभग एक सा ही है, हैं समय के साथ कुछ आगे पीछे जरूर हो सकता है। आज हम चर्चा करेंगे भारतीय कला की, विशेषतः प्राचीन भारतीय कला की जिसकी चर्चा कभी मध्य एशिया तक होती थी और जो आज भी अपने अथाह गहराई युक्त विशालता के साथ मौजूद है। भारतीय कला के प्राचीनता एवं संपन्नता को समझने हेतु पाश्चात्य लिखित पुस्तकों से बिलग प्राचीन भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैदों, सहित धरोहरों से भरे ग्रंथों को समझना होगा, भरोसा करना होगा अपनों पर। कला समय के साथ भले ही अपने स्वरूप को बदल ले पर बिना कला जीवन को सोचना बेमानी साबित होगा। समय के साथ लोग, शासक एवं रहन-सहन जिस तरीके से बदलता है कुछ-ऐसे ही कला भी अपनी यात्रा तय करती है, हैं इसी बीच कभी वो उफान पर होती है तो कभी किसी के शासन में सुमावस्था को प्राप्त कर जाती है पर होती जरूर है। गुहाओं से प्राप्त शिकारों, उनके रहन-सहन के चित्र, सिन्धु से प्राप्त कृतियाँ, योगी एवं नर्तकी की मूर्तियाँ, सारनाथ, भरहुत,सांची, अमरावती, अजन्ता, मथुरा, कोणार्क, खजुराहो, बोधगया आदि-आदि से प्राप्त कृतियाँ भारतीय थाती के समृद्धि हेतु काफी है। काष्ठमंच, वैदिका, स्तंभ, सारनाथ, रामपुरवा, लौरियानंदगढ़ आदि के थाती, मथुरा, बेसनगर, भरतपुर, कुरुक्षेत्र, विदिशा आदि से प्राप्त लोककलाएं, शालभाँजकाओं पर आधारित शालवृक्ष के नीचे स्त्रियों की उपवन क्रीडा संबंधित तमाम कृतियाँ, वैदिकाओ पर उत्कीर्ण तमाम घटनाओं पर तमाम आकृतियाँ, बोधिसत्व, तीर्थंकर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शिव-पार्वती आदि देव आकृतियाँ सब भारतीय कला के संपन्नता को ही उजागर करती हैं। भारतीय कला पर सूक्ष्मतम् दृष्टि डाली जाय तो भान होगा कि भारत के घर-घर में पना-पग पर कला है।

चौक पुरना, कोहबर आदि इन सभी का तो कोई इतिहास भूगोल

ही नहीं है बल्कि ये हमारे खून में ही है हों प्रदेश के हिसाब से परिवर्तन जरूर है पर उद्देश्य लगभग एक सा ही है। मनुष्यों के लिए जो चीज ज्यादा आसान होती है उसका प्रयोग अधिक देखा जाता है, उसकी उम्र भी ज्यादा होती है, कला, लोककला के साथ भी कुछ-ऐसा ही है। जिस प्रकार खाने-पीने, पहनने के लिए भोजन, पानी और वस्त्र की आवश्यकता है पहले भी रही है और आगे भी रहेगी, कला की भी जरूरत हमेशा बनी रहेगी। बिना इसके जिंदगी में अंधेरा ही व्याप्त रहेगा। ध्यान से अगर देखा जाए तो पहले अक्षर नहीं बल्कि लकीर खींच कर लिखने का प्रयास किया जाता है और वहीं से शुरुआत हो जाती है कला की। वैदिक या इससे पहले की बात करें तो देखेंगे कि यहीं पर चित्र मन के सुकून खातिर रचे जा रहे थे जो आगे चलकर पूजा पाठ तक पहुँच गये और धीरे-धीरे संकेतों के तरफ झुकाव होने लगा। त्रिकोण, चतुर्कोण आदि आकृतियों का सृजन जोरों पर होता रहा आसानी से प्राप्त रंगों गेरू, कोइला, खड़िया कुंकुम, फूल-पत्ती, हल्दी रंग-रंग के मिट्टी का प्रयोग भी अधिकतर दिखने लगा था।

पूजा-पाठ, शादी-विवाह, छोटे-मोटे आयोजनों में किये जाने वाले कार्यों में कला है, अलंकरण तो जैसे हमसफ़र है हर राही का। कदम-कदम पर अलंकरण, साज-सज्जा, रंग-रोगन देखने को मिल जाता है। घर दुआर सजाने हेतु, उत्सव और खुशी मनाने हेतु तब केनवास नहीं हुआ करता था बल्कि दीवार, जमीन ही काफी थी और सजा हुआ परिवेश देखकर मन आनंद हुए बिना नहीं रहता था। रंग-रोगन से तब घर, गाड़-गोरू के सींग, जमीन, गोरूआर, घूर सब कुछ रंगने की परंपरा थी। पहले जिसकी शुरुआत सौंदर्यबोध हेतु हुई थी-धीरे-धीरे वो परंपरा में आ गई और लोगों के जिंदगी से जुड़ती चली गई।

कहीं-कहीं तो कोहबर पर इतना बेजोड़ कार्य कर दिया जाता था कि प्रगतिशीलता के दौर की अच्छी-अच्छी कलाकृतियाँ उसके आगे पानी भरती सी जान पड़ती थीं।

भारतीय कला सिर्फ सौंदर्यबोध हेतु ही नहीं बल्कि उद्देश्यपरक भी है। स्वास्तिक, चक्र, गज, अश्व, सूर्य आदि का अंकन हम अक्सर करते आये हैं जिसके मूल में जाने पर इनके



पीछे की लंबी-लंबी कहानियाँ भी हैं और जिसके जानने भर से उस कृति के साथ ही उस रिवाज का महत्व भी कई गुना बढ़ जाता है और भारतीय कला पर गर्व करने सी बात भी हो जाती है। स्वास्तिक की बात करी जाय तो यह मानव के सर्वोत्तम मांगलिक चिन्हों में गिना जाता है जो चारों दिशाओं

में फैले सूर्य के प्रकाश का परिचायक है या चतुर्मुखी विकास के साथ भी इसे जोड़ा जा सकता है। इसकी चारों भुजाएं भगवान विष्णु की भुजा मानी गई है। सौधी और पड़ी

जाता है समझने वाली बात है। लोक कला में पूर्ण कुंभ का भी प्रयोग दर्शित है जो भरे-पूरे परिवार की मनोकामना हेतु बनाई जाती है। ये सुख-समृद्धि एवं जिंदगी के पूर्णता को भी दर्शाता है। भारतीय कलाकार शुरु से ही एक तपस्वी की भांति कृतियों के निर्माण में लगे होते थे, कलाकार तपस्वी ही होता है। अजन्ता इसका जीता जागता उदाहरण है जहाँ कई-कई सौ वर्षों तक लगातार कार्य होता रहा वो भी बिना किसी चहल-पहल के और वो जब लोगों के सामने आया तो लोगों को दाँतों तले उंगली दबाने पर विवश होना पड़ा। विषय, शैली, अलंकरण, लोच, लय, रेखा, रंग हर मामले में अकेले अजन्ता ही पूरे वैश्विक पटल पर भारी है ये बात कई विदेशी समीक्षक भी मानते हैं। भारतीय कला में एक बात जो आम है वो है सहायक आकृतियाँ जहाँ संकेतों का भी अच्छा उपयोग हुआ है। कमल, कल्पवृक्ष, फूल पत्तियों से सुरुज्जित घड़ा, पेड़-पौधे, बादल, सभी कृतियों में अपने साथ कुछ न कुछ विशेष लिए हुए होते हैं। कमल विष्णु के नाभि से भी संबंधित है और इसी बहाने ब्रह्म और सृष्टि से भी इसका संबंध जुड़ता चला जाता है और कृति विषद व्याख्या के ओर अग्रसर हो जाती है। बात कमल के पत्तों की हो तो वो लगभग गोल एवं ढाल की तरह होते हैं जो डूबते को सहारा युक्त भाव लिए है, इससे प्राप्त रेशों से बतियाँ बनाई जाती है। पूर्व में कपड़े भी बनते थे जो कई रंगों से निदान में सहायक होते थे।

कमल का जिन्न कई धर्मों में है, साहित्य एवं कविता में भी कमल का सहारा लिया गया है। ऐसे ही कृतियों में अंकन होता है कल्पवृक्ष का, पुराणों में इसे देवलोकীয় वृक्ष का दर्जा प्राप्त है, समुद्र मंथन से प्राप्त रत्नों में एक ये भी था। ऐसी मान्यता है कि इस वृक्ष से जो भी मांगा जाता है जरूर पूरा होता है मतलब साफ है कि कलाकृतियों में मनोकामना पूर्ति जैसे भाव भी पाये जाते थे अभी भी कलाकृतियों में तमाम स्वप्न, चाह, प्रेम आदि देखने को मिल जाते हैं। कलाकार स्वप्नदृष्ट की भांति हमेशा अपने सृजन में लीन रहते थे, रहते हैं और आगे भी रहेंगे। भारतीय कला सदा से संपन्न एवं समृद्ध रही है और हमेशा ही रहेगी बस हमें अपने में भारतीयता को जिंदा रखना होगा।

झूठा सपना

चेतना धनकर

सपनों की उड़ान कहकर,
पिंजरे से आसमान दिखाया जा रहा है।



कोई बात नहीं अगली बार लड़का होगा,
दुख छुपाकर उसे लक्ष्मी बताया जा रहा है।
उठो और लड़ो हमे झूठा सपना दिखाया जा रहा है।।
लड़के को महँगे और लड़की को
सरकारी स्कूल में भेज कर,
पैसा बचाया जा रहा है।
बहुत पढ़ लिया अब कॉलेज जाकर क्या करेगी,
बेइज़ती के डर से उसकी आशाओं को दबाया जा रहा है।
उठो और लड़ो हमे झूठा सपना दिखाया जा रहा है।।
ट्यूशन तो चार बजे खत्म होता है
ये छः बजे कहीं से आ रही है,
ताने मार कर उसे समाज में गिराया जा रहा है। लड़की है
बाहर क्यों जाएगी, उसे केंद कर
उसके बचपन को दफनाया जा रहा है।
उठो और लड़ो हमे झूठा सपना दिखाया जा रहा है ।।
बड़ी हो गयी है शादी करदो,
उस बेटी को परिवार पर बोझ बताया जा रहा है।
पिता की इज़्ज़त का वास्ता देकर,
उसके पूरे जीवन को दाव पर लगाया जा रहा है।
उठो और लड़ो हमे झूठा सपना दिखाया जा रहा है।।
इन सब के बाद भी उसे दया की मूरत, त्याग की देवी और
लक्ष्मी बताया जा रहा है।
उठो और लड़ो हमे झूठा सपना दिखाया जा रहा है।

करो मतदान भाईयों

- कमलेश कुमार दीवान

करो मतदान भाईयों,करो मतदान भाईयो।
यही अभियान भाईयो । तजो अभिमान भाईयो।
लोकतंत्र के इस उत्सव में हो सबकी भागीदारी
आजादी की यही मान्यता,हो सबकी पहरेदारी
आओ आज मनाएं उत्सव, अधिकारों के शस्त्र का



रोजगार रोटी से लेकर कोटि कोटि के वस्त्र का
संविधान की मंशा के अनुरूप करो मतदान साथियों
लोकतंत्र के जन्म दिवस का आज करे गुणगान भाईयों
यही अभियान भाईयो, तजो अभिमान भाईयो
करें मतदान भाईयों।

संकेत



अनुजीत इकबाल
वे कभी जान नहीं पाएंगे कि
क्या हुआ था उन दिनों में
जब तुम मन को सहलाते हुए



उसके अंधेरे कोनों में पनाह ले रहे थे
ठीक वैसे ही
जैसे लावा समुद्र में खोजता है अपना
स्थान
तुम्हारे पैरों के निशान
जीवन पर नज़र आने लगे थे
ठीक उसी तरह जैसे
प्रागैतिहासिक काल ने
अपने साक्ष्य भित्तिचित्रों पर छोड़े थे

उस घटक या अवयव की तरह
जो हृदय की मिट्टी को पोषित करता
है
वो मिट्टी, जो कामनाहीन है
श्लिष्ट नहीं होती, चिपकतीं नहीं
वैराग्य धारण किए रहती है
मैं इस गूढ़वाद से कभी भाग नहीं पाईं
क्योंकि पृथ्वी उतनी ही विस्तृत है
जितनी तुम्हारी हथेली।

चकाचौंध वाली नहीं,सुकून की चमक समेटती फिल्म

फिल्म समीक्षा	
 आदित्य दुबे <tr><td> (लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है) </td></tr>	(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)	

वर्ष 2015 में अपनी हिट फिल्म 'तमाशा ' के बाद से लम्बे समय तक परिदृश्य से बाहर रहे निर्देशक इम्तियाज अली ने - 'अमरसिंह चमकीला' के माध्यम से वापसी की है यदि हम यह कहें कि इस फिल्म के साथ इम्तियाज अली ने निर्णायक रूप से अपना मूड वापस पालिया है तो यह गुलत नहीं होगा। यह फिल्म इसी नाम के लोकप्रिय पंजाबी लोकगायक की बायोपिक है। अमरसिंह चमकीला, जिसे 'पंजाब का एल्विस' कहा जाता है, एक क्लासिक लोकगायक थे, एक बाहरी व्यक्ति जिसने जाति और वर्ग की उन बड़ी बाधाओं को चुनौती दी, जो लोगों को जीवन भर अपनी जगह पर बनाए रखती है। वह उनसे ऊपर उठकर एक ऐसी जगह पर पहुँच गए जहाँ बहुत कम लोग रहते हैं: एक कलाकार,

एक इंटरटेनर, एक कहानीकार, उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई के प्रतीक और तिरस्कृत समाज में श्रद्धेय अमरसिंह चमकीला के आईकॉन थे। इम्तियाज ने इस लोकप्रिय चरित्र की चकाचौंध वाले पक्ष की अपेक्षा उसकी जर्नाप्रिय छवि की सुकून भरी चमक को समेटने की कोशिश की है।

इम्तियाज की इस बात के लिये भी प्रशंसा की जानी चाहिये कि चमकीला की भूमिका के लिये उन्होंने दिलजीत दोसांझ को चुना। फिल्म बनने के बाद इम्तियाज ने कहा भी कि इस भूमिका को परदे पर जीवंत करने के लिये दिलजीत दोसांझ जैसा कोई नहीं है, जो चमकीला की भूमिका में चमकदार ईमानदारी और प्रामाणिकता लाता, जिनके गाने और रिकॉर्ड अभी भी न केवल

पंजाब में, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी बेस्टसेजर का दर्जा रखते हैं, जो दोनों के बीच बहुत विशिष्ट त्रिकोण को समझते हैं और सराहते हैं। गायक और उसका गीत, और वह समय और स्थान जहाँ से वह आया था।

पंजाबी लोक गायक 'अमर सिंह चमकीला' की बायोपिक के शीर्ष पर दो चीजें उभरकर सामने आती हैं। एक, जिनकी वर्ष 1988 में सताईस साल की उम्र में जालंधर के पास एक छोटे से गांव मेहसानपुर में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

दूसरी यह कि उनकी प्रासंगिकता अभी भी बनी हुई है इम्तियाज ने खुद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह कहा था कि उनके गाने, जो स्पष्ट यौन पंक्तियों और द्विअर्थी शब्दों से भरे हुए हैं, जो आरामदायक 'देवरों' और 'भाभियों' और अन्य वर्जित इच्छाओं की बात करते हैं, इस सबके बाद भी वो प्रतिष्ठित हैं और एक आइकन भी हैं, पंजाबी लोक गीतकारों की लम्बी कतार से ऊपर हैं, केवल जनप्रियता के कारण और मैं उनकी उसी छवि को पेन करना चाहता था। इम्तियाज इस कोशिश में सफल भी रहे।

समीक्षा की शब्दावली में जब

हम बाहोशोहवास यह कहते हैं कि इस फिल्म को देखकर यह लगा कि मोहित चौहान, इश्शाद कामिल और ए आर रहमान की तिकड़ी का कोई तोड़ नहीं है तो उसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं होती है। फिल्म - 'अमरसिंह चमकीला' एक तरह से रहमान की हिन्दी सिनेमा में वापसी की फिल्म भी है। उनके संगीत में जब जब लोकसंगीत आया है, उन्होंने कमाल किया है। रहमान को पूरब वाले दिल से चाहते है यह बात और है कि रहमान खुद पश्चिम की ओर भागते प्रतिीत होते हैं। यह फिल्म जिन दूसरे कारणों से देखने लायक करार दी गई है उससे इतर यह फिल्म इसलिए भी देखने लायक फिल्म है क्योंकि इसमें ए आर रहमान का प्रभावी संगीत है। रहमान के संगीत संयोजन में तैयार किया गया गीत - 'इश्क मिटाये हाय हाय ...' को सुनना एक विलक्षण अनुभव से होकर गुजरना है। और फिर फिल्म का उपसंहार अरिजीत की आवाज में - 'मैनु विदा करो ..' + सुनते समय यदि आँखें भर आएँ तो उसे सर्वथा लाजिमी ही कहा जायेगा।

फिल्म चमकीला की कहानी को फिर से बनाने के लिए इम्तियाज ने कई उपकरणों का उपयोग किया है, फ्लैशबैक के

भीतर फ्लैशबैक, कई सूत्रधार , कंप्यूटर ग्राफिक्स और नाटकीय स्वतंत्रता का एक प्रमाणित लाइसेंस और इस सबका अन्तिम परिणाम है मौजूदा छई घण्टे की फिल्म। हिन्दी सिनेमा में एक बेहतर और बड़ी तस्वीर पेश करने के लिये इम्तियाज छोटी चीजों पर भी पसीना बहाते है, और हमें विषय के अरुचिकर पहलुओं को दिखाने से नहीं कतराते है। चमकीला में दिलजीत दोसांझ और परिणीति चोपड़ा मुख्य भूमिका में हैं। दोसांझ के सजीव अभिनय के माध्यम से तो हमें एक ऐसे कलाकार का शक्तिशाली, मार्मिक चित्र मिलता है जो अपने विश्वासों के साथ जिया और मर गया।

फिल्म की सिनेमैटोग्राफी कमाल है। एडिटिंग और पैकेजिंग और भी अच्छी है। बस पंजाबी गानों के वक्त उनका हिंदी अनुवाद सबटाइटल्स के रूप में नीचे और ड्राइंग की तरह परदे पर लिखाजाना खटकता है।फिल्म पूरी तरह से इम्तियाज, दिलजीत और रहमान की है। इश्शाद कामिल अरसे बाद अपनी लय में लौटे है। और, इसमें परिणीति, अंजुम बत्रा पूरी टीम ने काबिले तारीफ काम किया है।

मीठा खाने का आनंद

व्यंग्य
 दिनेश विजयवर्गीय



मीठे स्वाद को संतुष्ट करने के लिए के लिए कई मन शक्कर मिठाई बनाकर लोगों के दिलों में घुल जाती है।

मीठे का महत्व देखिए। एक बार मैं एक विवाह समारोह में गया। खाने के



लिए आगे बढ़ा तो मालूम पड़ा कि मीठा तो एक दाना भी नहीं बचा। लोग मधुमक्खी की तरह मीठे ही मीठे पर झपट्टा मार गए।

मिठाई का स्वाद इतना मन भावन होता है कि शुरार पेशेंट भी अपने को रोक नहीं पता। भले ही उसे गोली की मात्रा और क्षमता बढ़ानी पड़े। कोई भी शारीरिक क्षमता घटने की स्थिति हो तो भी वह मिठाई से मुंह नहीं मोड़ता। चाहे फिर मिठाई खाने से शुरार लेवल बड़े बिगड़े। डॉक्टर को दिखाकर फिर ची हो जा और फिर मिठाई के प्रति सकारात्मक होकर मीठे का आनंद

भरती हो जाते और फिर सहानुभूति प्रगट करने वालों की परीक्षा लेते रहते कि मेरे स्वास्थ्य के प्रति कौन सच्ची कौन झूठी सहानुभूति दिख रहा है। मीठा खाकर बीमार पड़ने से अपना व पराये का ज्ञान होने लगता है। आपको मनुष्य जीवन मिला तो इस जीवन में इतना मीठा बनो कि लोग आपसे बातें करने के लिए लालायित रहें।

सच है मीठे की मिठास ,जन-जन की आस । कुल मिलाकर यही जीवन का सुखद सार है कि जीभर कर मीठा खाओ और हंसते मुस्कराते जीवन की ओ।

खग ही जाने..., खग की बोली...!

प्रकाश पुरोहित

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

यदि किसी से कहा जाए कि आपकी कार अब तीन पहियों की मदद से खड़ी है और एक पहिया किसी और की आर्थिक-मदद के लिए नदारद है, तो आप क्या करेंगे, एकदम दौड़ कर बाहर जाएंगे, कार को चारों तरफ से घूम-फिर कर देखेंगे और पता लगाने की कोशिश करेंगे कि किस दिशा का पहिया विद्रोह कर गया है या चुग लिया गया है। यह तो हुई आम आदमी के बताव की बात..., अगर यही बात आप किसी सरकारी अफसर को बताएंगे तो उनका कुर्सी पर बैठे-बैठे जवाब होगा- “यह बात मेरे संज्ञान में नहीं है। अभी मेरे संज्ञान में लाई गई है, पता करवाता हूं कि क्या सही में ऐसा हुआ है, क्योंकि ऐसा तो कभी होता नहीं है, फिर भी दिखवाता हूं और सही पाया गया तो जांच भी करवाई जाएगी। हम लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेंगे।” आम आदमी और अधिकारी में इतना ही फर्क होता है कि अधिकारी जब तक जांच ना करवा ले, उसे भरोसा नहीं होता है, इसलिए सबसे पहले अधिकारी के संज्ञान में बात को लाना जरूरी होता है। मुझे तो शक है... कोई यदि पतलून भी उतार ले जाए तो जवाब यही होगा कि मेरे संज्ञान में नहीं है...। बगैर जांच के अफसर आंखों देखी मक्खी भी खाता रहता

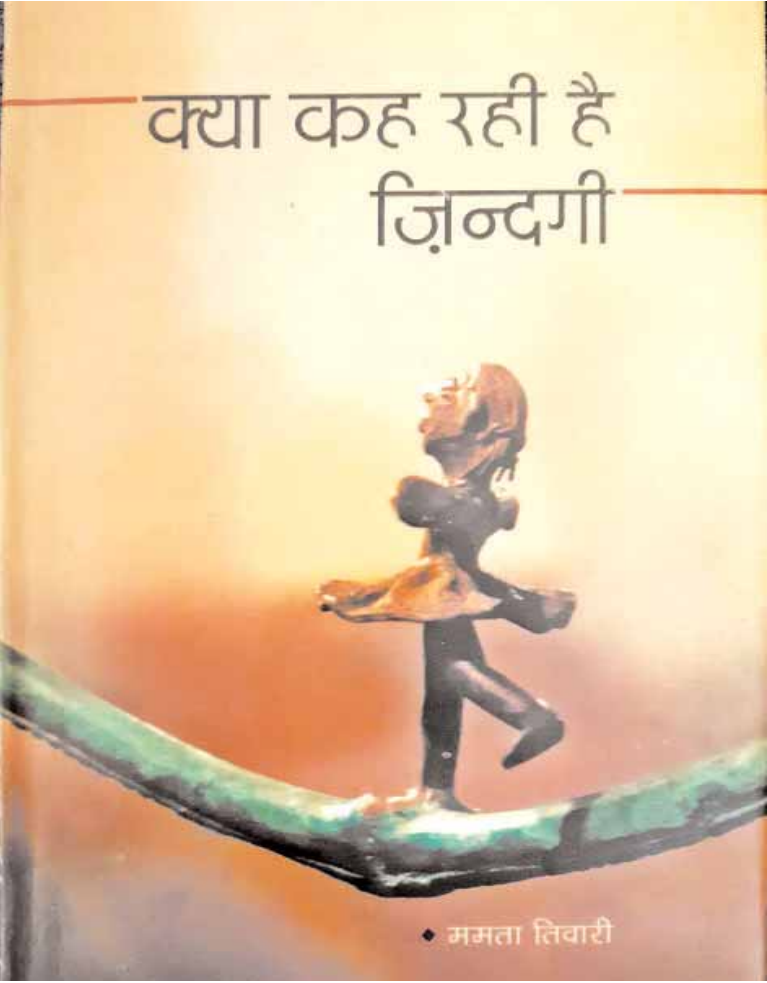


है कि संज्ञान में नहीं है। जैसे कोई शिकायत करे कि फलां चौराहे से फलां की मूर्ति गायब हो गई है, तो यह उम्मीद मत करिए कि अधिकारी फौरन उस इलाके के जूनियर को फोन लगाएगा- “क्यों तोमर, सुना है, स्टैचू कोई ले गया, जग देख कर बताओ, ध्यान से देखना, कोई वापस तो नहीं रख गया।” जैसे ही मूर्ति-चोरी की सूचना मिलती है तो अधिकारी को यह याद आ जाता है कि यह बात उसके संज्ञान में अभी तक नहीं लाई गई है। उनकी बात से तो यही लगता है कि चोर को ही सबसे पहले यह बताना चाहिए था कि सर, मूर्ति चोरी करने जा रहा हूं, आपके संज्ञान में ला रहा हूं, ताकि बाद में यह ना कहते फिरो कि मेरे संज्ञान में नहीं लाया गया है। लगता है, सरकारी अधिकारियों को ट्रेनिंग में यही सिखाया जाता है कि ‘कुछ भी हो जाए, सबसे पहले अपना पल्ला झाड़ लो कि मेरे संज्ञान में नहीं है।’ आम आदमी तो बेचारा यह समझ ही नहीं पाता है कि यह संज्ञान क्या बला है! उसे लगता है, यह खग की भाषा है, जो खग ही समझते हैं। पूछने का तो रिवाज ही खत्म हो गया देश में कि पूछ ही लें, सर, संज्ञान यानी...?’ अब आप अधिकारी से यह भी तो नहीं पूछ सकते कि श्रीमान, यह संज्ञान किस बला का नाम है और अगर यह पहले से होता तो क्या हो जाता और यह भी कि ऐसे कोई मामले भी हैं जनहित के, जिनका संज्ञान आपको हो। वैसे, संज्ञान का अर्थ ही शिकायत करने वाले को पता नहीं होता है, तो बेचारा समझता है कि यह भी कोई सरकारी खानापूर्ति होगी, जो शिकायत करने वाले के ही जिम्मे रहती है। आम आदमी का साथ उत्साह ही यह सुन कर ध्वस्त हो जाता है कि ‘मेरे संज्ञान में नहीं है।’ यह भी तो नहीं पूछ सकते कि हुजूर, अगर संज्ञान में नहीं है तो लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। अफसर के अगाड़ी से बचने की सलाह शायद ऐसे ही किसी मौके के लिए दी गई होगी कि पूछना मना है। संज्ञान से अफसर का बचाव हो जाता है। सही भी है कि जब संज्ञान में ही नहीं है, तो बेचारा अधिकारी करे तो क्या करे। फिर संज्ञान में लाने के लिए सरकारी जूनियर ही लगते हैं, क्योंकि अधिकारी को बेईमान जनता पर भरोसा नहीं करने की कड़ी ट्रेनिंग मिली होती है। किस्सा है ना, सरकारी कर्मचारी ने अपने दौरे का बिल भेजा अफसर के पास। अफसर के संज्ञान में नहीं था कि फलां शहर से फलां शहर की दूरी साठ किलोमीटर है, उसने भत्ता रिजेक्ट कर दिया कि यह दूरी पचास किलोमीटर ही है, इसलिए टीए-डीए की पात्रता नहीं है। कुछ दिनों के बाद अफसर के नाम बड़ा-सा पार्सल आया, खोला तो देखा, मील का पत्थर था, जिस पर शहर से शहर की दूरी साठ किलोमीटर लिखी थी। अर्थात् बगैर सबूत-पुरावे के जो यकीन नहीं करता है, उसे ही अफसर कहते हैं और इसे ही संज्ञान कहते हैं। जिस तरह ‘आदमी तीन... गोलियां छह’ कहने के बाद गम्बर कहता है ना कि ‘हमें कुछ नहीं मालूम।’ बस, यही अदा होती है मेरे संज्ञान में नहीं कहने वाले अधिकारी की! इसके विपरीत मंत्री ऐसे मौकों पर यह नहीं कहते कि मेरे संज्ञान में नहीं है। वे तो शपथ लेते समय ही पढ़ते हैं कि ‘जो भी मेरे संज्ञान में लाया जाएगा।’ यदि आप राजनाथ सिंह से पूछ लें कि मणिपुर में हालत कब सुधरेगी तो उनका जवाब होगा- “‘हम पड़ोसी देशों को सबक सिखा कर रहेंगे, ईंट का जवाब पत्थर से देंगे, घर में घुस कर मारेगे।’” यानी जवाब तो देते हैं, अफसरों की तरह नहीं कि यह मेरे संज्ञान में अभी लाया गया है, जांच करवाते हैं। गृहमंत्री शाह से ऐसा ही कुछ पूछ लें कि पड़ोस में आतंकी मारे जा रहे हैं तो उनका जवाब तय है कि “खुश होना चाहिए, आपको अफसोस क्यों हो रहा है।” यदि आप प्रधानमंत्री मोदी से पूछेंगे... छोड़िए, उनसे तो संसद भी नहीं पूछ सकती!'

विक्रमल मत घबराइये खास तौर से पुरुष वर्ग क्योंकि ना तो मैं उपदेश देने वाली हूं ना ही आपको सुधारने बैठी हूं। मैं अपने अनुभव से कुछ बात बताने जा रही हूं। दरअसल, मेरी एक बहुत ही करीबी मित्र है। दोनों की जोड़ी भी गजब है। खूब तू-तू-मैं-मैं करते हैं फिर हँस पड़ते हैं। सीरियसली ऐसा जोड़ा मैंने तो नहीं देखा।

एक दिन मैं ऐसे ही समय उनके घर पहुंची जब दोनों में बहस चल रही थी। मुझे देख उसने पति से आखिरी डायलॉग देकर बात खत्म करनी चाही। हम तीनों हँस पड़े। उसने कहा, दरअसल, तुम्हारी 'मां' ने बचपन से तुम्हें ऐसी डिकशनरी नहीं दिखाई जिसमें सॉरी, प्लीज, थैंक यू लिखा हो। कोई और पति-पत्नी होते तो मां का नाम सुनते ही तलवारें खिंच जाती जैसा कि होता आया है। मैं रास्ते में सोचते-सोचते आ रही थी कि सच ही कहा उन लोगों ने। मुझे याद है बचपन में मां कान पकड़ के माफी मांगने को कहती थी अगर गलती से मददगार को बुरी जुबान में कुछ कहूं। हर बात पर हिंदी में धन्यवाद और रात को सोते समय भी ईश्वर को आभार देना। साथ ही यदि किसी से कोई आम कराओ तो हिंदी में मां द्वारा कृपया, पापा द्वारा प्लीज कहना सिखाया गया था, ये हमारी जुबान में पे ऐसा चढ़ गया था कि हमारी रोजमर्रा ही बातचीत में शामिल हो गया था। हम गुस्सा भी करते तो कहते, प्लीज, धक्का मत दो। आज सोचती हूं मैंने अपने बच्चों को भी सब सिखाया है, पर पहले के सारे मां-बाप एक जैसे होते थे। अच्छी भाषा और स्वाभिमान सिखाते थे। दृश्य बदल गया है। इस जेनरेशन में कुछ मां-बाप अपने बच्चों में सॉरी न होने का अहंकार डालते हैं। अगर तुम्हारी टीचर ने ऐसा कहा तो सॉरी कहने की जरूरत नहीं है। तुम गलत हो ही नहीं सकते। कई बार मेरा बेटा मुझसे लड़ता था। फलाना तो गलती करने पर सॉरी नहीं कहता है। आप हमसे हर बात में सॉरी कहलवाती हो। मैं उससे हमेशा कहती उसका ऐसा ना करना तुम्हें ठीक नहीं लगता तो अगर तुम भी ऐसा ही करोगे तो उसमें और तुम में फर्क क्या रह जायेगा। औरतें हर बात पर प्लीज (कृपया) कहती हैं। अपने अधिकारों पर भी। प्लीज मुझे किराना दिला दो या प्लीज डॉक्टर के पास चलो वगैरह वगैरह। पुरुष सचमुच प्लीज नहीं कहते हैं। यदि कहना पड़ जाये तो वो स्वयं के बारे में होता है जैसे प्लीज मुझे जल्दी उठा देना या प्लीज मेरी शर्ट प्रेस कर दो। बस इससे ज्यादा की उम्मीद मत करना। हां, मेरा बेटा कसर मेल या एसओपी या कोई जरूरी कागज तैयार करना हो तो अपनी पत्नी को प्लीज कहते हुए आग्रह कर देता है, यार तुम तैयार कर दो और वो उसके इस प्लीज (कृपया) से प्लीज्ड (खुश होकर) उसका भूल जाते हैं। बच्चों को सबसे पहले उन्हें धन्यवाद देना सिखाइये। मेरे बच्चे आकर पहले उन्हें गले लगाते हैं। जाते समय चुपचाप उनकी जेब में रुपया डाल देते हैं। मैं अनदेखा कर देती हूं। उनका ये शुकराना होता है कि शिवदयाल भईया आप हमारे मां-बाप, जोई की देखभाल अच्छे से कर रहे हो। और उनके जाते ही मेरे साथ मेरे हेल्पर्स भी उनके वापस आने का इंतजार करते हैं। जो ना करें वो प्यार

काम कर देती है। अब आता है थैंक्यू जो खाने में नमक ही तरह जरूर होना चाहिये। आजकल तो होटल, हॉस्पिटल या कंपनी मैनेजमेंट, एअर होस्टेस सबको बार-बार थैंक्स (धन्यवाद) कहना सिखाया जाता है। कोरियन जगह पर बो कर के अर्थात् आधा दोहरा होकर, झुक कर धन्यवाद या अभिवादन किया जाता है। मैंने अपनी तरफ से (पति-पत्नी की लड़ाई से इतर) ये भी सीखा कि हम अक्सर अपने हेल्पर्स को धन्यवाद कहना उनका भला जो करें वो तिरस्कार उनका भी भला जो न करे मदद देख सी दुआ जो ना बढ़ाये हाथ तहेदिल से दुआ जो ना दें बुरे वक्त में साथ दिल से आभार जो रहे हमेशा साथ उनको ढेर सारा प्यार। मैंने यूँ कहा, तो बोला भला ये कैसी बात अच्छी खुरी दोनों बात पे आभार मैंने कहा हम ईसा है धरती पर करने आये हैं प्यार नफरत का तो सबके पास है खजाना तुम्हें करना है सिर्फ छोटा सा शुकराना धीरे-धीरे आभार की आदत पड़ जायेगी दुनिया हसीन नजर आयेगी लाये तो नहीं थे ना कुछ अपने साथ फिर क्यों समेटते हो दिनरात जाओगे फिर भी खाली हाथ उसके आगे तेरी क्या बिसात हां, ले जा सकते हो वहां प्यार, दुआ, सुकून की सीगाता। हालांकि, लंबा बहुत है सफर हो सके तो कम में कर गुजर जितना रहोगे रूई सा हल्का सफर उतना आसान होगा तू उसका असली बंदा था तेरे बाद जमाने यही कहेगा। एक आखरी बात जो शायद मेरी आध्यात्मिक प्रकृति के कारण जुड़ गई था मां से ज्यादा पिता ने सिखाया था दुआ करना, प्रार्थना करना, फिर चाहे वो आपका दुश्मन क्यों ना हो, किसी को बददुआ मत देना। कभी ना कभी वो लौट कर तुम्हें लगती है। पहले मेरे बेटे को ऐसा नहीं लगता था पर समय के साथ परिपक्वता आने पर उसे स्वीकार किया कि दुआ, प्रार्थना दोनों काम करती है। दोनों में सूत भर का अंतर है। दुआ शुभकामना है। प्रार्थना आप जानते ही हैं, किसी के भले के लिये यूनिवर्स या ईश्वर से मांगना जिसे अंग्रेजी में आजकल खूब कहाँ जा रहा है अफिरमेशन यानी किसी के भले के लिये या सकारात्मक प्रार्थना। वैसे भी ईश्वर या ब्रह्मांड आपकी नकारात्मक प्रार्थना या बददुआ स्वीकार नहीं करता। तो कहते रहे रहिये सॉरी, प्लीज थैंक यू ... करते रहिये प्रार्थना। सब पूरी होती है फिर अहसास होगा ये सब कहने से मन कितना हल्का हो जाता है। बस कहना ही तो होता है जैसे मैं पूछती हूं आप सबसे, और क्या कह रही है जिंदगी?



प्रकृति का अनुपम सौंदर्य



प्रकृति ने हमे अदभुत सौंदर्य प्रदान किया है। पहाड़, जंगल, कल कल बहती नदियां, झरने, जीव जन्तु, पशु पक्षी जब प्रकृति की छांव में आनंद से विचरण करते हैं तो एक अनुपम सौंदर्य की तस्वीर हमे सामने दिखती है। गिलहरी प्रकृति की छांव में आराम करते हुए।

//भाषान्तर//



अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज ब्रिटिश कवि पीटर निबलेट की एक कविता का अनुवाद ।

बाघ

अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ गुर्गता है,
अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ गुस्से में आवाज करता है,
अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ दहाड़ता है।
फिर वह विचार करता है।
यह अच्छ़्त्र होगा कि सलाखों के पीछे

न रहना पड़े हर वक़्त
क्योंकि ये मेरी दृष्टि को बाधित करती हैं
काश कि मैं जंगली होता,

यहां प्रदर्शन की जगह।
परन्तु यदि मैं जंगली होता,

शिकारी मुझे मार सकते थे,
परन्तु यदि मैं जंगली होता,

खाने में जह़र आ सकता था,
परन्तु यदि मैं जंगली होता,

पानी मुझे डुबो सकता था।
फिर वह विचार करना बंद कर देता है
और ...

अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ गुर्गता है,
अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ गुस्से में आवाज करता है,
अपने पिंजरे की सलाखों के पीछे से

बाघ दहाड़ता है।



□ यूके से प्रज्ञा मिश्रा



फ़लस्तीन में जब उथल-पुथल होती है, मारवान बरघौटी (64) के बारे में बात करने लगते हैं। हत्या के आरोप में इजरायली जेल में आजीवन कारावास काट रहा यह नेता बदलाव की बात करता है। फलस्तीन शहर और उसे काटने वाली इजरायली दीवारें बरघौटी बाह्य ग्राफिटी चित्रों से ढंकी हैं, उसके हथकड़ी वाले हाथ सिर से ऊंचे हैं। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादियों के साथ-साथ मुसलमान भी बरघौटी सम्मान करते हैं। हमास ने गाजा युद्ध विराम समझौते में उसकी रिहाई का कहा है।

‘टूमारो’स फ्रीडम’ ऐसी डॉक्यूमेंट्री फिल्म है, जो ऐसा कुछ बताती है, जिससे मीडिया दूर रहता है। भविष्य की सोच और रोड मैप या रोड मैप का हिस्सा, इजराइल और फलस्तीन के मौजूदा हालात से बाहर। यह मारवान बरघौटी के बारे में है, जो ओस्लो शांति समझौते के शुरुआती हामी थे और 2002 में इजराइल पर हमले के बाद जेल में डाल दिए गए। बरघौटी बेकसूर हैं, बल्कि इजरायली अदालत को उन पर मुकदमा चलाने का कोई अधिकार नहीं है। बरघौटी ने मुकदमे में बचाव नहीं किया, हालांकि अदालत के बाहर इनकार किया कि हत्याओं का आदेश उन्होंने दिया था। बरघौटी ने भूख हड़ताल की, कैद में पीटा गया और बदसलूकी की गई। उनके बच्चों को निशाना बनाया गया और गिरफ्तार कर किया। उनकी पत्नी को मिलने नहीं दिया, लेकिन फिल्म दिखाती है कि कुछ

और भी हो रहा है। यह अन्याय और न्यायिक कूरता है। बरघौटी धैर्यवान, आत्म-निंदा करने वाला और साफगोई इंसान हैं। खुद को फलस्तीनी सड़क का आम आदमी कहते हैं। बरघौटी विरोध के साथ हैं, लेकिन कब्जे को खत्म करने के लिए हिंसा के हक में नहीं हैं, तो उनसे दूरी भी नहीं बनाई है। जेल से उन्होंने फलस्तीनी राजनीति में खास रोल अदा किया है और इजराइल के साथ फलस्तीनी राज्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

जेल से उनके कुछ पत्र सुझाव देते हैं कि उन्होंने यह विचार छोड़ दिया है कि इजराइल के साथ सीधे बातचीत करने से मामला खत्म हो जाएगा। गार्जियन (2015) में उन्होंने लिखा था- असली समस्या यह है कि इजराइल ने शांति के बजाय कब्जे को चुना है और बातचीत पर परदा डाला है। दुनिया भर में हर सरकार इसे जानती है, फिर भी उनमें से कई दिखावा करते हैं कि गुजरें कल नाकाम नुस्खों पर लौटने से आजादी और शांति पाई जा सकती है।

...